दो बड़ी दुर्घटनाओं के सबक

भारत डोगरा

मई के महीने में दो बड़ी-बड़ी दुर्घटनाओं से दुनिया दहल गई है। इन दोनों दुर्घटनाओं में सैकड़ों लोग मारे गए हैं। ये दुर्घटनाएं लापरवाही और भ्रष्टाचार की वजह से हुईं।

इनमें से पहली दुर्घटना तुर्की में हुई जहां कोयले की खदान के एक बड़े हादसे में 300 से अधिक खनिक मारे गए। दूसरा बड़ा हादसा उत्तरी कोरिया में हुआ जहां अपार्टमेंट बिल्डिंग के गिर जाने से अनेक परिवारों के सभी सदस्य मारे गए। कुल मृतकों की संख्या तो पता नहीं है, पर इतना निश्चित है कि उनकी संख्या सैकड़ों में है।

13 मई को तुर्की के सोमा शहर में एक कोयले की खदान में आग व फिर कार्बन मोनोऑक्साइड एकत्र होने से यह त्रासदी हुई। खनन क्षेत्रों के विपक्षी नेताओं ने कहा है कि उन्हें बार-बार खनन दुर्घटनाओं के शिकार हुए खनिकों के परिवारों के पास दुख प्रकट करने जाना पड़ रहा है व ऐसी दुर्घटनाएं बार-बार हो रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि निजी क्षेत्र की खदानों में मात्र उत्पादन व मुनाफा बढ़ाने पर ज़ोर दिया जाता है जिससे सुरक्षा पक्ष की अनदेखी होती है और त्रासद दुर्घटनाएं होती रहती हैं।

इस दुर्घटना के लिए लापरवाही व मुनाफाखोरी को ज़िम्मेदार बताते हुए इसका राष्ट्रव्यापी विरोध हुआ है। प्रधानमंत्री एरडोजेन व उनके कुछ सहायकों द्वारा दुर्घटना के प्रति पर्याप्त संवेदनशीलता न दिखाने के कारण लोगों का गुस्सा और बढ़ गया।

सुरक्षा के प्रति लापरवाही के कारण कोयला खनन में अनेक अन्य बड़ी दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। दक्षिण अफ्रीका में कोलब्रुक खदान का धंसना ऐसी ही दुर्घटना थी जिसमें 437 खनिक मारे गए थे। भारत में राष्ट्रीयकरण से पहले अनेक दशकों तक केवल मुनाफे को ध्यान में रखकर ऐसा कोयला खनन किया गया जिससे बड़े क्षेत्र में ज़मीन धंसने लगी व भूमिगत आग फैलने लगी। अनेक स्थानों पर धंसे हुए क्षेत्र में नदी व बाढ़ का पानी पहुंचने लगा। चासनाला दुर्घटना इस तरह ही हुई थी व उसमें 376 खनिक मारे गए थे। वर्तमान में भी रानीगंज, आसनसोल आदि कोयला क्षेत्र भूमि धंसान की समस्या से प्रभावित हैं। हाल के समय में कोयला खनन की कई बड़ी दुर्घटनाएं चीन में हुई हैं जहां कोयले का उत्पादन तेज़ी से बढ़ाने का बहुत दबाव रहा है।

उत्तर कोरिया की राजधानी में मई 13 को एक 23 मंज़िला आवासीय भवन ढह गया। सरकारी समाचार एजेंसी केसीएनए द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है, 'अपार्टमेंट भवन का निर्माण ठीक से नहीं किया गया था। इसका नियमन करने वाले व सुपरवाइज़ करने वाले अधिकारियों ने बहुत लापरवाही भरा व्यवहार किया।'

स्पष्ट है कि इस दुर्घटना के पीछे गंभीर लापरवाही थी जिसे सरकार ने स्वयं स्वीकार किया है। इस दुर्घटना को एक चेतावनी की तरह लेना चाहिए क्योंकि कई बिल्डरों के लापरवाही भरे निर्माण कार्यों के समाचार अनेक स्थानों से हमारे देश से भी मिलते रहते हैं। इस तरह की बड़ी दुर्घटनाओं के कारणों की विस्तार से समीक्षा कर ऐसे प्रयास होने चाहिए कि इन दुर्घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार गलतियां फिर न दोहराई जाएं। ***(स्रोत फीचर्स)***